

**विरोध** — मानक आकार के निरुपाधिक <sup>तर्कवाक्य</sup> शब्द ही उद्देश्य और विधेय वाले होकर भी एक दूसरे से गुण या परिणाम या दोनों में ही भिन्न हो सकते हैं। प्राचीन तर्कशास्त्रियों ने इस प्रकार की भिन्नता को 'विरोध' नाम दिया था।

दो तर्कवाक्य तब व्याप्ताती (Contradictory) हैं - जब उनमें एक दूसरे की अस्वीकृति हो; अर्थात् जब वे दोनों शब्द सत्य सत्य न हो और दोनों शब्द ही असत्य न हों।

मानक आकार के दो तर्कवाक्य जो एक ही उद्देश्य और विधेय पद वाले हों किन्तु जो गुण और परिमाण दोनों में एक दूसरे से भिन्न हों परस्पर व्याप्ताती हैं।

A सभी जज बकील हैं

O कुछ जज बकील नहीं हैं

ये दो A और O तर्कवाक्य जो एक दूसरे से गुण और परिमाण दोनों में ही विरुद्ध हैं, स्पष्टतः व्याप्ताती हैं। इनमें कम से कम एक शब्द सत्य है और कम से कम एक असत्य है।

E कोई राजनीतिक व्यक्ति आदर्शवादी नहीं है

I कुछ राजनीतिक व्यक्ति आदर्शवादी हैं।

ये दोनों E और I तर्कवाक्य परिणाम और गुण दोनों में परस्पर विरुद्ध और व्याप्ताती हैं। A और O उसी तरह परस्पर व्याप्ताती हैं जैसे E और I।

**विपरीत (Contrary)** — यदि दो तर्कवाक्य एक सत्य सत्य न हो सकें, यद्यपि दोनों शब्द सत्य असत्य ही सकते हों,

तो वे "विपरीत" (Contrary) कहलाते हैं।

पारम्परिक या अस्तु के विचार के अनुसार एक ही उद्देश्य और विधेय वाले किन्तु गुण में भिन्न सर्वग्रापी तर्कवाक्य विपरीत है।

A सभी कवि आलसी होते हैं।

E कोई कवि आलसी नहीं होता है।

ये दोनों A और E तर्कवाक्य एक साथ सत्य नहीं हो सकते, यद्यपि दोनों असत्य हो सकते हैं। इसलिए ये विपरीत समझ जाते हैं।

विरुद्ध (Subcontrary) :- यदि

दो तर्कवाक्य एक साथ असत्य न हो, यद्यपि दोनों सत्य हो सकते हैं, तो वे परस्पर "विरुद्ध" कहलाते हैं। उसी पारम्परिक विचार के अनुसार एक ही उद्देश्य और विधेय वाले पर गुण में भिन्न अग्रग्रापी तर्कवाक्य विरुद्ध हैं।

I कुछ हीरे मूल्यवान पत्थर हैं।

O कुछ हीरे मूल्यवान पत्थर नहीं हैं।

इन जैसे I और O तर्कवाक्य दोनों एक साथ सत्य हो सकते हैं, पर दोनों एक साथ असत्य नहीं हो सकते। अतः इन्हें विरुद्ध समझना चाहिए।

इस प्रकार जब दो तर्कवाक्यों के उद्देश्य और विधेय एक ही हों, और वे गुण में भी एक ही हों, और वे गुण में भी एक ही तथा केवल परिमाण में भिन्न हों तो वहाँ पर उनमें असहमति के न होते हुए भी विरोध है। ऐसी अवस्थाओं में अग्रग्रापी तर्कवाक्य का सत्य सर्वग्रापी तर्कवाक्य के सत्य से निकला या उसमें अन्तर्निहित

रामभा जाता था।

सभी मकड़ियाँ अष्टपद जानकर हैं।

इस ~~का~~ A तर्कवाक्य के सत्य से

कुछ मकड़ियाँ अष्टपद जानकर हैं।

इस ~~का~~ सत्य निकलता है। और

कोई मकड़ी कीड़ा नहीं है।

इस E तर्कवाक्य के सत्य के तदनुरूप

कुछ मकड़ियाँ कीड़े नहीं हैं।

इस A तर्कवाक्य सत्य निकलता है। एक

सर्वव्यापी और तल्लम्बद्ध अंशव्यापी (अर्थात् एक ही उद्देश्य और विषय एवं एक ही गुण वाले अंशव्यापी और सर्वव्यापी) तर्कवाक्य के बीच के विरुद्ध को

“उपाश्रयण” (Subalternation) नाम दिया गया था। ऐसी स्थिति में सर्वव्यापी तर्कवाक्य को

“उपाश्रय” अंशव्यापी तर्कवाक्य को “उपाश्रित”

कहते हैं। ऐसा माना गया है कि “उपाश्रयण” में “उपाश्रय” “उपाश्रित” को अपने में

अन्तर्भूत किए रहता है। परन्तु “उपाश्रित”

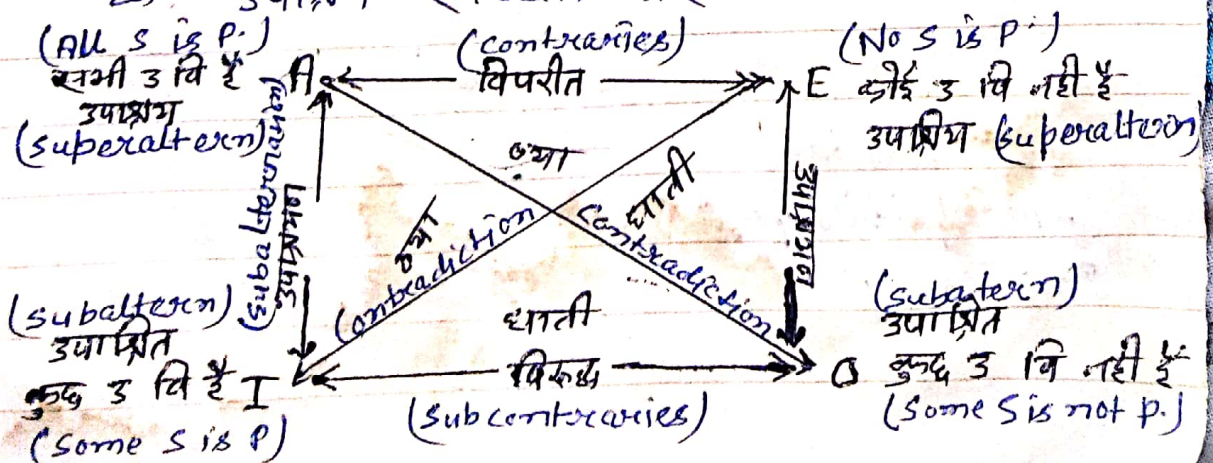
“उपाश्रय” को अपने में अन्तर्भूत नहीं करता।

कुछ जानकर मात्र है।

कुछ जानकर मात्र नहीं है।

इन जैसे उपाश्रित सत्य हैं किन्तु इन दोनों

के उपाश्रय स्पष्टतः असत्य हैं।



इस विषय में व्यवहित या शान्तरानुमान (Mediate Inference) और अव्यवहित या अनंतरानुमान (Immediate Inference) के विभाजन करने की प्रथा है।

अनुमान :- एक या अनेक आधार वाक्यों से कोई निष्कर्ष निकालना अनुमान कहलाता है।

व्यवहित अनुमान (Mediate Inference) - जहाँ पर एक से अधिक आधारवाक्य प्रयुक्त होते हैं। व्यापकवाक्य में होता है, जिसमें दो आधारवाक्य से द्वितीय के माध्यम सम्बन्ध जाता है।

अव्यवहित अनुमान (Immediate Inference) - जब कोई निष्कर्ष केवल एक आधारवाक्य से निकलता है, तो उस अनुमान को "अव्यवहित" कहते हैं।

	A	E	I	O
A True	T	F	T	F
E True	F	T	F	T
I True	U	F	T	U
O True	F	U	U	T
A False	F	U	U	T
E False	U	F	T	U
I False	F	T	F	T
O False	T	F	T	F

T - True  
 F - False  
 U - Undetermined  
 OR, Infinite

Dr. Suresh Ram  
 Dept. of Philosophy  
 D.K. College

A	E	I	O
T	f	t	F
f	T	F	t
d	F	T	d
F	d	d	T